परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था,मुंबई

कक्षा-XI हिन्दी

पाठ- गलता लोहा

लेखक-शेखर जोशी

Moduel-2

Logout

शेखर जोशी

जन्म-सन् 1932, अल्मोड़ा (उत्तरांचल)

प्रमुख रचनाएँ : कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है (कहानी-संग्रह)

एक पेड़ की याद (शब्दचित्र – संग्रह)

पिछली सदी का छठवाँ दशक हिन्दी कहानी के लिए युगांतकारी समय था। एक साथ कई युवा कहानीकारों ने अब तक चली आती कहानियों के रंग-ढंग से अलग-अलग तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू की और देखते-देखते कहानी की विधा साहित्य-जगत के केंद्र में आ खड़ी हुई। उस पूरे उठान को नाम दिया गया नई कहानी आंदोलन। इस आंदोलन के बीच उभरी हुए प्रतिभाओं में शेखर जोशी का स्थान अन्यतम है। उनकी कहानियाँ नई कहानी आंदोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज का मेहनतकश सुविधाहीन तबका उनकी कहानियों में जगह पाता है। निहायत सहज एवं आडंबरहीन भाषा-शैली में वे सामाजिक यथार्थ के बारीक नुक्तों को पकड़ते और प्रस्तुत करते हैं। उनके रचना-संसार से गुजरते जुए समकालीन जनजीवन की बहुविध विडंबना को महसूस किया जा सकता है। ऐसा करने में उनकी प्रगतिशील जीवन-दृष्टि और यथार्थ बोध का बड़ा योगदान रहा है।

**‘गलता लोहा'** शेखर जोशी की कहानी-कला का एक प्रतिनिधि नमूना है| समाज के जातिगत विभाजन पर कई कारणों से टिप्पणी करने वाली यह कहानी इस बात का उदाहरण है कि शेखर जोशी के लेखन में अर्थ की गहराई का दिखावा और बड़बोलापन जितना ही कम है, वास्तविक अर्थ-गंभीर्य उतना ही अधिक| लेखक की किसी मुखर टिप्पणी के बगैर ही पूरे पाठ से गुजरते हुए हम यह देख पाते हैं कि एक मेघावी, किंतु निर्धन ब्राह्मण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है, जहाँ उसके लिए जातीय अभिमान बेमानी हो जाता है| मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे की प्रस्तावना करता प्रतीत होता है, मानों लोहा गलकर एक नया आकार ले रहा हो|
कहानी के शुरुआत में मोहन अपने खेतों के किनारे उग आई काँटेदार झाड़ियों को साफ करने के उद्देश्य से निकलता है| उसके पिता पंडित वंशीधर पुरोहिताई का काम कर परिवार का पेट भरते

पेज-1

थे| लेकिन अब वो इतने वृद्ध हो चुके थे कि उनके बूते का कोई काम नहीं था| मोहन ने अपने पिता का भार हल्का करने के लिए खेती का काम सँभाल लिया| रास्ते में वह अपने हँसुवे की धार तेज कराने शिल्पकार टोले की तरफ मुड़ गया| वहीँ वह अपने बचपन के मित्र धनराम से उसके आफर में मिला| दोनों ने एक साथ पढ़ाई की थी| जहाँ मोहन पढ़ने में तेज था वहीँ धनराम थोड़ा मंदबुद्धि था| मास्टर त्रिलोक सिंह मोहन को बहुत पसंद करते थे क्योंकि वह एक मेघावी छात्र था| इसके विपरीत धनराम को पाठ याद न कर पाने के कारण हमेशा मार पड़ती थी| जाति का लोहार होने के कारण उसे मास्टर के व्यंग्यों का सामना करना पड़ता था| इन सब के बावजूद धनराम ने मोहन को कभी अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा| अपने पिता से उसने लोहारगिरी का काम सीखा था और उनके गुजरने के बाद यही व्यवसाय अपना लिया|

चूँकि मोहन पढ़ने में तेज था, इसलिए उसके पिता ने उसकी आगे की पढ़ाई के लिए शहर भेज दिया| वहाँ उसके साथ नौकरों जैसा व्यवहार किया जाता था| उसकी पढ़ाई बीच में ही रूक गई| काम की तलाश में उसने कई कार्यालयों तथा फैक्टरियों के चक्कर लगाए| लेकिन उसे सफलता नहीं मिली| उसके पिता पंडित वंशीधर को बहुत आशा थी कि शहर से वह बड़ा आदमी बनकर लौटेगा| लेकिन मोहन की किस्मत को कुछ और ही मंजूर था| गाँव वापस आने के बाद उसने खेती का काम सँभाल लिया| वहीं वो अपने मित्र धनराम के आफर में जब उसे लोहा मोड़ते हुए गौर देखा तो उसकी आँखों में एक चमक-सी थी| धनराम के ऐसा न कर पाने पर वह बड़ी ही फुर्ती और आत्मविश्वास के साथ लोहे को मोड़ने में सफल हो गया| इस प्रकार कहानी के अंत में मोहन जातिगत पारंपरिक व्यवसाय के सोच से मुक्त होकर अपने कारीगरी और कार्य-कौशल को सबके समक्ष प्रस्तुत करता है|

शब्दार्थ:

**पृष्ठ संख्या 56**अनायास-बिना प्रयास के। शिल्पकार-कारीगर। अनुगूँज-प्रतिध्वनि। निहाई-लोहे का ठोस टुकड़ा जिस पर लोहार लोहे को रखकर पीटते हैं। ठनकता-कसा हुआ तेज स्वर। खनक-आवाज। हँसुवा-घास काटने का औजार। बूते-वश। पुरोहिताई-पुरोहित का काम करना। यजमान-पूजा-पाठ कराने वाला। निष्ठा-लगन। संयम-नियंत्रण। जर्जर-जो कमजोर एवं बेकार हो, टूटा-फूटा। उपवास-भूखे रहना। नि:श्वास-गहरी साँस। रुद्रीपाठ-भगवान शंकर की पूजा के लिए मंत्र पढ़ना।

**पृष्ठ संख्या 57**आशय-मतलब। अनुष्ठान-धार्मिक कार्य। अनुत्तरित-बिना उत्तर पाए। कुंद-धारहीन। धौंकनी-लोहे की नली। कनिस्तर-लोहे का चौकोर पीपा। पारखी-परखने की क्षमता रखने वाला। धमाचौकड़ी-उछल-कूद साँप सुंघ जाना-डर जाना। समवेत-सामूहिक। कुशाग्र-तेज। मॉनीटर—प्रमुख।

**पेज-2**

**पृष्ठ संख्या 58**हमजोली-साथी। हीनता-छोटापन। प्रतिदवंदवी-दुश्मन। गुंजाइश-जगह। दूणी-दुगुना। सटाक्-डडा मारने की आवाज़। संटी-छड़ी।

**पृष्ठ संख्या 59**घोटा लगाना-रटना। चाबुक लगाना-चोट करना। ताप-गरमी। सामथ्र्य-शक्ति। घन-बड़ा व भारी हथौड़ा। प्रसाद देना-दंड के रूप में वार। विरासत-पुरखों से प्राप्त ज्ञान, संपत्ति आदि। पैतृक-माँ-बाप का।

**पृष्ठ संख्या 60**दारिद्रय-गरीबी। विदयाव्यसनी-विद्या पाने की ललक रखने वाला। उत्साहित-जोश में लाना। डेरा तय करना-रहने का स्थान निर्धारित करना। पात-पतेल-पत्ते आदि। रेला-समूह। बिरादरी-जाति।

**पृष्ठ संख्या 61**साक्षात्-सामने। हाथ, बँटाना-सहयोग करना। हैसियत-सामथ्र्य, शक्ति। हीला-हवाली-ना-नुकुर। मेधावी-होशियार। लीक पर चलना-परंपरा के आधार पर चलन्। चारो’ न होना-उपाय न होना।

**पृष्ठ संख्या 62**मुद्दा-विषय। बाबत-के बारे में। स्वप्नभग सपना दृउन! सैक्नेटेरियट-सचिवालयै।

**पृष्ठ संख्या 63**फाल-लोहे का हिस्सा। तत्काल-तुरंत। मर्यादा-मान-सम्मान। असमंजस-दुविधा। सँड़सी-लोहे को पकड़ने का कैंचीनुमा औज़ार। अभ्यस्त-अभ्यास से सँवरा। सुघड़-सुंदर आकार वाला। हस्तक्षेप-दखल। आकस्मिक-अचानक। अवाक्-मौन, चकित।

**पृष्ठ संख्या 64**हाथ डालना-काम के लिए तैयार होना। शकित-संदेह। धर्मसंकट-दुविधा। उदासीन-हटकर। त्रुटिहीन-निर्दोष। सर्जक–रचनाकार। स्पर्धा-होड्।

---------------------------------------------------------------------------------------------

द्वारा

संतोष कुमार खरवाल

स्नातकोत्तर शिक्षक

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, जादुगोड़ा

**पेज-3**